आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में होगा विराट समारोह

क मुमुक्षु लेंगे आज जैन मुनि दीक्षा

लाडनूं ख्त्र अ□टूबर।

जैन विश्व भारती स्थित सुधर्मासभा में आज प्रातः – बजे आचार्य महाप्रज्ञ हजारों की जन–मेदनी के स मुख क जनों को जैन भागवती दीक्षा प्रदान करेंगे। इस समारोह में युवाचार्य महाश्रमण, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा, मु य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा के द्वारा दीक्षा के रहस्यों पर प्रकाश डाला जायेगा।

उक्त जानकारी देते हुए मुनि जयंत कुमार ने बताया कि जैन मुनिचर्या का पालन करना दृढ़ मनोबल से ही संभव होता है। भौतिकवादी युग में वैराग्य की तरफ बढ़ना महान कार्य है। उन्होंने कहा कि राग से विराग की ओर बढ़ना, ज्ञान, दर्शन, चारित्र की उच्चतम स्थिति को पाने की साधना करना ही जैन दीक्षा है। मुनि जयंतकुमार ने बताया कि आचार्यप्रवर ने अब तक सैकड़ों लोगों को मुनि साध्वी, समण–समणी दीक्षा प्रदान की है। जो अपने जीवन का कल्याण करते हुए मानवता के उत्थान में स पूर्ण देश में शक्ति का नियोजन कर रहे हैं।

मुनि जयंतकुमार ने बताया कि आज आयोजित होने वाले विराट जैन भागवती दीक्षा समारोह में गंगाशहर के समण मुदितप्रज्ञ को श्रेणी आरोहण कराते हुए मुनि दीक्षा प्रदान की जायेगी और मुमुक्षु हरीश आसाड़ा, मुमुक्षु हार्दिक आसाड़ा, मुमुक्षु हिमांशु सूरत, मुमुक्षु सुमित हरियाणा को मुमुक्षु से सीधे मुनि दीक्षा प्रदान की जायेगी। इसी कार्यक्रम में मुमुक्षु प्रज्ञा पचपदरा, मुमुक्षु निशा पचपदरा, मुमुक्षु याति भुज, मुमुक्षु सीता हिसार (हरियाणा), को साध्वी एवं महाराष्ट्र की मुमुक्षु सरिता को समणी दीक्षा प्रदान की जायेगी। उल्लेखनीय है कि समण मुदितप्रज्ञ मुनि जयंतकुमार के बड़े भ्राता है। मुमुक्षु प्रज्ञा के भाई मुनि विनीत आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में साधनारत है।

तैयारियों को दिया अंतिम रूप

लाडनूं ख्त्र अ€टूबर।

आचार्य महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री शांतिलाल बरमेचा ने बताया कि इस जैन भागवती दीक्षा समारोह में भाग लेने के लिए प्रदेश के विभिन्न जिलों के अलावा गुजरात, महाराष्ट्र, हरियाणा, पंजाब, कर्नाटक, बंगाल, व आसाम तक से करीब दस हजार श्रद्धालु जैन विश्व भारती पहुंचे हैं जिनकी

समस्त प्रवास व्यवस्था जैन विश्व भारती परिसर के अंदर के सभी भवनों सहित शहर के सभी प्रमुख भवनों में प्रवास व्यवस्था समिति के तत्वावधान में की गई है। आगन्तुकों की विशाल सं या को देखते हुए जैन विश्व भारती स्थित सुधर्मा सीा पांडाल को और अधिक विस्तृत किया गया है। तेरापंथ समाज के सभी कार्यकर्ताओं को विभिन्न दायित्व सौंपे गये हैं जिन्हे वे ब ूबी निभा रहे हैं।

दीक्षार्थियों का निकाला भव्य वरघोड़ा

लाडनूं ख्त्र अ€टूबर।

नगर में मंगलवार को आज जैन भागवती दीक्षा ग्रहण करने वाले मुमुक्षुओं का भव्य वरघोड़ा निकाला गया। पहली पट्टी स्थित ऋषभ द्वार भवन से शुरू हुआ यह जुलूस नगर के मु य मार्गों से होते हुए जैन विश्व भारती पहुंचा। जुलूस में एक साथ रथ में सवार पुरुष मुमुक्षु एवं दूसरे रथ में महिला मुमुक्षु का लोगों ने जोश खरोश के साथ स्वागत किया। जुलूस के साथ हजारों लोगों ने शिरकत कर जुलूस को भव्यता प्रदान की वहीं तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ युवक परिषद, कार्यकर्ताओं सहित समग्र जैन समाज जुलूस में उमड़ पड़ा।

इस जुलूस में रशिया से समागत क्ब जनों का एक ग्रुप सबके आकर्षण का केन्द्र रहा। जब जैन विश्व भारती में प्रेक्षाध्यान का अ यास करने आये रशियन सैलानियों ने पंक्तिबद्ध जुलूस में शरीक हुए तो उपस्थित हजारों लोगों ने जोरदार स्वागत किया।

भाग्यश्री भवन में सभी दीक्षार्थी भाई-बहिनों का स्वागत करते हुए परंपरा के अनुसार भागचंद बरड़िया ने खोल भराई की रस्म अदा की गई। जैन विश्व भारती पहुंचने पर आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण ने दीक्षार्थियों को मंगलपाठ का श्रवण करवाया, सायंकालीन पारमार्थिक शिक्षण संस्था में मुमुक्षु बहनों द्वारा दीक्षार्थियों के लिए मंगल भावना समारोह आयोजित किया गया। जिसमें सभी मुमुक्षु को पारिवारिकजनों, सभा-संस्थाओं एवं पारमार्थिक शिक्षण संस्था में साधनारत मुमुक्षु बहनों के द्वारा आगामी जीवन हेतु मंगल कामना प्रस्तुत की गई। वहीं दीक्षा लेने वाले मुमुक्षु भाई एवं बहनों ने सभी से गृहस्थ जीवन काल में हुए त्रुटिपूर्ण व्यवहार हेतु क्षमा याचना की। इस कार्यक्रम में संस्थाओं के पदाधिकारियों सहित बालोतरा नगर के एनएसयूआई के अध्यक्ष रोनक श्रीश्रीमाल विशेष रूप से उपस्थित थे।

परिवार को टूटने से बचाना जरूरी : आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं ख्त्र अ□टूबर।

आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन विश्व भारती स्थित सुधर्मा सभा में अपने नियमित व्या यान के दौरान कहा कि संयुक्त परिवार की व्यवस्था में एक साथ सैकड़ों लोग रह सकते थे परन्तु आज स्थिति बिल्कुल विपरीत बन गई है जिसमें पिता और पुत्र का व्यवहार भी परस्पर संतुलित नहीं है। पुत्र में पिता के प्रति कृतज्ञता के भाव का अभाव होने से परिवार के टूटने की स्थिति बनी है। व्यक्ति जब इन्द्रियों के विषय में जागरूक बनकर उन्हें अधिक महत्व देने लगता है तब वह मिथ्या अवधारणाओं को जन्म देता है और वापसी स बन्धों को नकार देता है। सही चिंतन के अभाव में एक मिथ्या जीवन शैली का निर्माण होता है जिससे अनेक मानसिक समस्याएं भी उत्पन्न होने लगती है। अमेरिका जैसे विकसित देश में समस्त भौतिक सुविधाओं के होने के बावजूद वहां टेंशन व डिप्रेशन मौजूद है। आदमी को वात्सल्य और प्रेम की जरूरत होती है। मोह से ग्रस्त होते हुए भी जब व्य€ित निर्मोही जैसा व्यवहार करता है तो वह समस्याओं को जन्म देता है। उन्होंने कहा कि दुनिया में परिवर्तन अवश्य भावी है। जन्म के साथ मृत्यु भी निश्चित है इसके बावजूद जैन दर्शन के त्रिपदी सिद्धांत के अनुसार तत्व शाश्वत होता है, वह नित्य होता है। वह नष्ट होकर भी अनित्य है। उसका मूल स्वरूप कभी नष्ट नहीं होता केवल पर्याय बदल जाते हैं।

युवाचार्य महाश्रमण ने अपने उद्बोधन में कहा कि व्यक्ति गृहस्थी में रहते हुए भी संयम बरतकर अपने जीवन को साधनामय बना सकता है। उन्होंने धर्म का एक अर्थ कर्तव्य निभाने के प्रति जागरूक रहना चाहिए वही उसका स्वधर्म कहलाता हैँ अनंकाल के जन्मों की यात्रा में अनेक ऐसे अवसर आत्मा के समक्ष आते हैं जब वह प्रखर संयम की ओर बढ़ती है तभी व्यक्ति गृह त्यागी होकर सन्यासी बन सकता है। बैंगलोर से आये स्वामी संत वीर महाराज ने अपने वक्तव्य में भारतीय दर्शन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जैन धर्म विश्व शांति के लिए अपना विशेष योगदान प्रदान कर रहा है। आज जब धर्म अपने पतनकाल से गुजर रहा है ऐसे समय में जैन धर्म के सूत्र और अणुव्रत अनेक मानवीय समस्याओं के समाधान में सहायक है।

मुनि सुखलाल ने जैन धर्म के व्यापक प्रचार के लिए जमीन से जुड़े कार्यकर्ताओं और श्रावकों की जरूरत बताते हुए कहा कि धर्मसंघ में साधु-साध्वियों के साथ समणियों व उपासकों की अधिक आवश्यकता है जो समाज को नई दिशा प्रदान करने में स्वतंत्रता से कार्य कर सकें। कार्यक्रम में बैंगलोर और सिलीगुड़ी से आये श्रावकों ने गीतों के माध्यम से अपने क्षेत्र में साधु-साध्वियों के चातुर्मास की प्रार्थना की। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।